सैरांग रेलवे कनेक्टिविटी: एक्ट ईस्ट नीति के लिए एक प्रवेश द्वार

UPSC प्रासंगिकता

प्रारंभिक परीक्षा (Prelims) से जुड़े विषय:

- कालादान परियोजना
- एक्ट ईस्ट नीति
- सैरांग रेलवे
- बिम्सटेक कनेक्टिविटी
- एशियन हाईवे नेटवर्क

मुख्य परीक्षा (Mains) GS पेपर II/III से संबंधित विषय:

- भारत और उसके पड़ोसी देशों के साथ संबंध
- अवसंरचना – रेलवे और सीमा क्षेत्र कनेक्टिविटी
- भारत की लुक ईस्ट / एक्ट ईस्ट नीति

समाचार में क्यों?

- भारतीय रेलवे ने मिजोरम में बैराबी से सैरांग तक 51.38 किमी लंबी ब्रॉड गेज रेल लाइन का निर्माण कार्य पूरा कर लिया है। हालाँकि यह राज्य की राजधानी आइज़ोल से 18 किमी दूर है, फिर भी यह परियोजना क्षेत्रीय संपर्क और भारत कीएक्ट ईस्ट नीति की दिशा में एक प्रमुख रणनीतिक उपलब्धि मानी जा रही है।

पृष्ठभूमि:

- ऐतिहासिक अलगाव: मिजोरम और पूर्वोत्तर भारत का अधिकांश हिस्सा भारत के मुख्य रेलवे नेटवर्क से काफी हद तक कटा रहा।
- पहले:केवल बैराबी में 1.5 किमी मीटर गेज लाइन थी।
- विस्तार: ब्रॉड गेज परियोजना 2008–09 में शुरू हुई थी
- उद्देश्य: पूर्वोत्तर की सभी राजधानियों को रेल से जोड़ना।
- दुर्गम भूगोल: 51.38 किमी के इस मार्ग में 48 सुरंगें (कुल लंबाई: 12.85 किमी) और 142 पुल बनाए गए, जिनमें भारत का सबसे ऊँचा पियर भी शामिल है।
- दुर्घटना: 2023 में एक निर्माणाधीन पुल गिरने से 18 लोगों की मौत हुई।
- वित्त और समय रेखा: कुल लागत Rs.5,021 करोड़; जून 2025 में सुरक्षा अनुमति प्राप्त हुई; उद्घाटन शेष।

रणनीतिक और क्षेत्रीय महत्त्व:

क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ावा:

- सैरांग स्टेशन आइज़ोल से मात्र 18 किमी दूर है।
- सिलचर तक की यात्रा 5+ घंटे से घटकर सिर्फ 1.5 घंटे रह जाएगी।
- माल परिवहन सस्ता होगा और सड़कों की निर्भरता घटेगी।

पर्यटन और व्यापार की संभावनाएं:

- कनेक्टिविटी से इको-टूरिज्म, हस्तशिल्प, बांस उत्पाद और बुनकर उद्योग को बढ़ावा मिलेगा।
- मिजो कृषि और पारंपरिक वस्त्रों का व्यापार सुगम होगा।

एक्ट ईस्ट नीति को मजबूती:

- यह स्टेशन कलादान मल्टी-मोडल परियोजना के तहत सित्तवे पोर्ट (म्यांमार) से माल ढुलाई में मदद करेगा।
- भारत की रणनीति:पूर्वोत्तर को ASEAN बाज़ारों से जोड़कर दक्षिण-पूर्व एशिया का प्रवेश द्वार बनाना।

चुनौतियाँ और सीमाएँ:

- भौगोलिक बाधाएँ:भूस्खलन, ऊँचाई और मौसम की अनिश्चितता ने निर्माण में देरी की।
- श्रम और लॉजिस्टिक्स:सामग्री लाना मुश्किल; प्रशिक्षित श्रमिकों की कमी।
- सुरक्षा समस्या: 2023 की पुल दुर्घटना से संरचनात्मक सुरक्षा पर प्रश्न उठे।
- भूराजनीतिक बाधाएँ:
    - म्यांमार में सैन्य तख्तापलट (2021) और गृहयुद्ध से कलादान परियोजना रुकी।
    - बांग्लादेश की राजनीतिक अस्थिरता से अगरतला–अखौरा रेल परियोजना अटकी।
    - मणिपुर में जातीय संघर्ष से इम्फाल–मोरेह रेलवे प्रभावित हुआ।

एक्ट ईस्ट नीति के अंतर्गत अन्य परियोजनाओं की स्थिति:

परियोजना	स्थिति
कलादान मल्टी-मोडल परियोजना	म्यांमार गृहयुद्ध के कारण रुकी हुई
अगरतला–अखौरा रेल लिंक	बांग्लादेश की राजनीतिक स्थितियों के कारण अटकी
दीमापुर–जुबज़ा रेल लाइन (नागालैंड)	प्रगति पर
इम्फाल–मोरेह रेल लाइन (मणिपुर)	आंतरिक संघर्षों के कारण देरी
एशियन हाइवे-1 (असम–मोरेह)	आंशिक रूप से चालू

आगे की राह (Way Forward) — सैरांग रेलवे परियोजना और एक्ट ईस्ट नीति

1. आइज़ोल तक अंतिम कड़ी जोड़ना:
   - शेष18 किमी लाइन को सैरांग से आइज़ोल शहर के केंद्र तक बढ़ाना आवश्यक है ताकि परियोजना की वास्तविक उपयोगिता पूरी हो सके।

2. सीमापार परियोजनाओं को गति देना:
   - म्यांमार और बांग्लादेश के साथ राजनयिक प्रयासों को फिर से सक्रिय करना।
   - कलादान परियोजना और अगरतला–अखौरा कॉरिडोर को प्राथमिकता के साथ पूर्ण करना।

3. सीमा सुरक्षा और स्थायित्व को मजबूत करना:
   - इन्फ्रास्ट्रक्चर डिप्लोमेसी को राजनीतिक और रणनीतिक समर्थन के साथ जोड़ना अनिवार्य है।

4. बहुपक्षीय मंचों का उपयोग करना:
   - जापान, ASEAN, BIMSTEC और एशियन डेवलपमेंट बैंक (ADB)जैसे भागीदारों के साथवित्त और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देना।

5. मल्टी-मोडल लॉजिस्टिक हब को बढ़ावा देना:
   - सैरांग को एक लॉजिस्टिक हब के रूप में विकसित करना, जहाँ सड़क, रेल और अंतर्देशीय जलमार्ग जुड़ सकें।

6. जन-केंद्रित विकास को प्राथमिकता देना:
   - रेल विस्तार को हुनर विकास, आदिवासी आजीविका समर्थन, और पर्यटन योजनाओं से जोड़ना।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न (GS Paper II – 250 शब्दों में):

प्रश्न:
"सैरांग रेलवे परियोजना के शुरू होने से भारत की एक्ट ईस्ट नीति को किस प्रकार बल मिलता है? पूर्वोत्तर को दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ने वाले रेल और सड़क गलियारों में प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं?"